खेती की तैयारी

खेत को सर्वप्रथम खरपतवार मुक्त किया जाता है। उसके बाद 10 टन एफ.वाई.एम. (FYM) और नाइट्रोजन की 75 किग्रा मात्रा प्रति हेक्टेयर डाली जाती है। बेहतर पैदावार के लिए 3 मी. x 3 मी. की दूरी उचित मानी जाती है। पौधे को बढ़ने के लिए आधार की आवश्यकता होती है, इसलिये लकड़ी की खपंचियों का सहारा दिया जाता है। पौधों के विकास के शुरुआती चरणों के दौरान रिक्त स्थान को लगातार निराई करके खरपतवार रहित रखना चाहिए।

फसल प्रबंधन

फसल की परिपक्वता और कटाई

फसल की कटाई पतझड़ के समय की जाती है। जब तना 2.5 सेमी से अधिक व्यास का होता है, तब उसे जमीन से कुछ फीट ऊपर से काट दिया जाता है। बचे हुये भाग से पुनः नयी शाखाये निकल सकती है। कटाई के बाद पौधे को छोटे टुकड़ों में काटकर छाया में सुखाया जाता है। इन्हें थैलों में संग्रहित किया जा सकता है, और हवादार गोदाम मे भंडारण किया जा सकता है।

उपज एवं खेती की लागत

दोवर्षों बाद प्रति हेक्टेयर लगभग 1500 किलोग्राम ताजा/400 किलोग्राम सूखी उपज मिलती है।

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)
पादप कार्यिकी विभाग
जवाहरलाल नेहरु कृषि विश्वविद्यालय, अधारताल, जबलपुर (म.प्र.)
राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार
सम्पर्क : 0761-2681200, 97793012385, 8482988599, 9301338726
ई–मेल : rcfccentraljnkvv@gmail.com बेबसाइट : https://www.rcfccentral.org

गिलोय

Tinospora cordifolia (Willd.)
Hook. F & Thomson

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)
राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड
आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

गिलोय

***Tinospora cordifolia* (Willd.)**
Hook. F & Thomson

कुल	:	मेनीर्स्पमेसी (Menispermeceae)
संस्कृत नाम	:	अमृता, जीवन्तिका
अंग्रजी नाम	:	हर्ट लीवड मूनसीड (Heart Leave Moonseed)
आयुर्वेदिक नाम	:	अमृता, गुडुची
हिन्दी नाम	:	गिलोय, गुरबेल
व्यापारिक नाम	:	गिलोय
वैज्ञानिक नाम	:	*टीनोस्पोरा कार्डिफोलिया* (*Tinospora cordifolia*)
उपयोगी भाग	:	तना, जड़, संपूर्ण पादप

गिलोय एक प्रतिरक्षा तंत्र तथा यकृत को मजबूत करने वाला टॉनिक है और इसमें मूत्रवर्धक और कामोद्दीपक गुण पाये जाते हैं। यह मलेरिया और जीर्ण ज्वर में प्रयुक्त होने वाला लता पादप है। इसका उपयोग सामान्यतः दुर्बलता, भूख, बुखार, मूत्र विकार, मधुमेह, गठिया और अपच मे किया जाता है। आयुर्वेद साहित्य में इसे ज्वर की महान औषधि माना गया है इसके ताजे पौधे, सूखे पौधे की तुलना में अधिक प्रभावी होते हैं। आयुर्वेद की प्रसिद्ध औषधि गिलोय वटी, गिलोय घनवटी, अमृतारिष्ट इसके प्रमुख उत्पाद है।

रासायनिक घटक

गिलोय में मुख्य रासायनिक घटक गिलोनिन, गिलोस्टेरॉल, गिलीनिन, बरबरिन और फुरानोडाइटरपीन पाये जाते है।

आकारकीय लक्षण

गिलोय की लता सामान्यतः कुण्डलाकार चढ़ती हुई पाई जाती है। नीम एवं आम के वृक्षों के आस–पास भी यह मिलती है। जिस वृक्ष को यह अपना आधार बनाती है, उसके गुण भी इसमें समाहित रहते हैं। इस दृष्टि से नीम पर चढ़ी गिलोय श्रेष्ठ औषधि मानी जाती है। इसका तना छोटी अंगुली से लेकर अंगूठे जितना मोटा होता है। इसमें से स्थान–स्थान पर जड़ें निकलकर नीचे की ओर झूलती रहती हैं। चट्टानों अथवा खेतों की मेड़ों पर जड़ें जमीन में घुसकर अन्य लताओं को जन्म देती हैं। बेल की ऊपरी छाल बहुत पतली, भूरे या मटमैले रंग की होती है, जिसे हटा देने पर भीतर का हरित मांसल भाग दिखाई देने लगता है। अन्तर्भाग चक्राकार दिखाई पड़ता है। पत्ते हृदय के आकार के, खाने के पान जैसे, एकान्तर क्रम में व्यवस्थित होते हैं। पत्ते लगभग 2 से 4 इंच तक व्यास के स्निग्ध होते हैं तथा इनमें 7 से 9 नाड़ियाँ होती हैं। पत्र–डण्ठल लगभग 1 से 3 इंच लंबा होता है। फूल ग्रीष्म ऋतु में छोटे–छोटे पीले रंग के गुच्छों में आते हैं। फूल पीले, उभयलिंगी, 2 मिमी से कम आकार के होते हैं। फल पकने पर रक्त के समान लाल हो जाते हैं। बीज सफेद, चिकने, कुछ टेढ़े, मिर्च के दानों के समान होते हैं। इसमें फूल मई–जून माह में आते हैं और सितंबर–अक्टूबर में फलन होता है।

वितरण

यह भारत की स्थानीय प्रजाति है। भारतीय गणराज्य के ज्यादतर प्रदेशों में इसका कृषिकरण किया जाता है।

जलवायु और मिट्टी

यह पादप सामान्यतः उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है। हल्की मध्यम रेतीली–दोमट मिट्टी और पर्याप्त जल निकासी वाली मृदा इसकी खेती के लिए उपयुक्त होती है। यह उच्च वर्षा या जलभराव को सहन नहीं कर सकता है।

प्रवर्धन सामग्री

इस पादप की वाणिज्यिक फसल के लिए स्टेम कटिंग सबसे उपयुक्त रोपण सामग्री है। जून–जुलाई में मातृ पौधों से कटिंग प्राप्त की जा सकती है। पौधे को बीज द्वारा भी उगाया जा सकता है, लेकिन बीज द्वारा पौधे तैयार होने मे कटिंग से लगभग दोगुना समय लगता है।

कृषि तकनीक

नर्सरी तकनीक

जून–जुलाई माह मे पुराने तनों से कटिंग प्राप्त कर सीधे खेत में लगायी जा सकती है। एक हेक्टेयर भूमि में लगभग 3500 कटिंग्स की आवश्यकता होती है।